गीतमाळा

आत्माणदी-काव्य

सा महो नानूराम सस्कर्ता
लोक साहित्य प्रतिष्ठान
काळू-334602
बीकानेर (राज)

पैलो संस्करण 1991

मोल साठ रुपया मात्र

पूठो चितराम रामकिसन अडिग

प्रकासक लोक साहित्य प्रतिष्ठान
कालू 334602 (बीकानेर)

मुद्रक सांखला प्रिण्टर्स सुगन निवास
चन्दन सागर बीकानेर

सुमरणी रैं सुमेरू

म्हार वास्त आखो विश्व चराचर, भगवान री काव्य सजणा है। इसड़ें अनोख ढग री का-य सजणा जकी कन्ी बोदी तथा बेअसर नी हुव, हर हमेश फविया र अत करण म अमर आलोकी प्रभु प्रतिविम्ब उघाड। म्हारें हिड़दें ही श्रुति सहिता र एक गूढाय रो स्फुरण– पश्य देवस्य काव्य न ममार न जीयति' हुव, जद गीतमाळा रा गीत ऊक्ल, गुण गाइजें तथा माळा पाइजें।

अकार न अळगो करण र समैं विश्वनियता विभु मे श्रद्धा जोड़णी, का य रचना रो कारण। म्हारी पेट कतरणी री धार थोड़ी मोड़ी होई-माळा पोवणी पळाई। पण, लामैं हाड काई छेड़ो' उरली कूट रा एक-आध रोज काढचा, आग भुवाळी खावू। सागी ठौड पोवणा डाढी दोरप रो कार है।

जाणतो–म्हारा मोती मिणिया जग ज्योति वपरा देसी, सो गव गळग्यो। गीत बाचणिया बै र घर रा गलो पूछ–म्हैं विघळाइज न सूनो हो ज्यावू क देवू – 'ठा नी उणा र धर रो गलो कठानकर कढ? गीता बणी भाव साधणा री सोध ह्ा-या अर सोधो, म्है तो ग्यान हीणो हू। मालिक री श्रद्धा करो – जका तीनू लोका रो मात्र अकलियो स्वामी है।' 'एको विश्वस्य भुवनस्य राजा।'

'गीतमाळा' मे सग तुळछी च-दण अर रुद्राक्ष रा मणका ही नही मूगिया, काच कथीर तथा कचकड रा मैणिया मोती, जळपोसिया, सोनळिया, अर एक-ना खरा हीरा-पना ही जौहरी जाच खातर स्भोया है। अ एक सौ आठ है अर सग बरोबर नी, चूधा मूधा, अपरोखा लागला, सो माळा न राम खूटी सू खीच आरा मींच, मन म ही गीता रा गड़का लराय लेइज्या। आ मिणिया जूपी माळा पा बाचणिया न सूपी सभळाई है।

रामनवमी 2048 वि स
शुभ आदित्यवासर

सदीव थारो––
सा महो नानूराम सस्कर्ता
पो –कालू (334602) बीकानेर

सूचणिका मणका

प्राथना 9
भगवान 10
किरपा वारिद 11
धाळो धाठळ 12
हृरखो सत 13
भगवान ही गाण 14
मिलण रा सासा 15
हलकारा री हाक 16
अणहूता सपना 17
सुमन सावण 18
मौत री मैफल 19
कुरमोडो धन 20
याचना 21
वालू 22
परमो रा मागो 23
दरप 24
सत सावन 25
लाख धरावरी सभा 26
बानारा 27
धणियां साजन 28
धमाधोकडी 29
विरही आतमा 30
धणी बावरो मन 31
किरपा 32
शुभाशुभात् 33
प्रम भारो 34
ऊँचो रमग्यो 35
जाण पिछाण 36
उपदेश दरावा 37
लोह किरपा 38
साच सरणै 39
हिय च्यानणा 40
अटळ सूत 41
गीत गाण अरजी (हरजस) 42
पगा पड़ 43
अरज अनुनय 44
म्हारो मुह मुख 45
शिखर इनाम 46
आसा मेळो 47
भाव वताव 48
महजीवा गीत (भजन) 49
थारा आणद 50
थारी साथ 51
निवतो मायो 52
मान्तपणा 53
तुम्हा प्राण 54
हाड गात (हरजस) 55
अभिवन्दन 56
नाव सुमरण 57
जीवण झूपडी 58
पढना पढां रा मरम 59
विदाई 60

मौत रो स्वागत 61
काळ रो भजन 62
जमारै री मांग 63
वोही आवै 64
आपो इधकार 65
आज र वष न 66
फूला री खती 67
काळी लकीरा 68
छिणगारो अवसर 69
जीव चेतावणी (भजन) 70
विजय वाण 71
अैश्वर तो 72
शक्ति माग 73
नित नूय नेह 74
वड घर रो गुमेज 75
गीता रो सोभी 76
मौन स्वर 77
आघमाण 78
दरसण दुळभ 79
जागतीजोत 80
मातरूप माईत 81
समदर उछळग्या 82
मोटी मलार 83
मनभायी भोगवाळी 84
अइखण ओल्हो 85
चोराचोरी 86
घटा घुमड सांझ 87
आळ जुजाळ 88
म्हारो निसाणो 89
डरतो डील 90
स्वतत्र हद 91
भजन बगलो 92
सितार वादण 93
थार प्रकाश 94
ज्हाड जळ भरावो 95
सिझ्यावारी सुरता 96
पवत माडो पान 97
ध्यान चिन्तण 98
नमो अरिहत 99
जीवण दिवलो 100
गीतमाळा 101
मिन्दर री ममा 102
मौन गीत 103
पुराणी पखाण 104
प्रम पालागण 105
पलडो मळो 106
प्रमु अकरस 107
प्रमु थारी लीला 108
माळी 109
ठाली बरतण 110
ओगुण दास 111
अणत समै 112
इक्कीसवी सदी सूरापो 113
मोवणी साक्ळ 114
सुधा साधणा 115
सुदश स्वग 116

गीतमाळा

प्रार्थना

भगवान ! म्हैं था सू इती भीख मागू-वस, ससार न समझू !
थू-म्हैंम ठीच इतरो हो अकार उघाडे राख क म्हे थामे
पूरमपूर एकाकार हो सकू ! मिनख नै मिनख जाणू !
म्हैंमे वस इतरी मुक्त चेतणा परोट क म्हैं थान च्यारूमेर
गुणगास सकू अर रात दिवस, हर छिण–
म्हारो प्रेम थारै अपण कर सकू !
म्हैंम माय इतरो ही ओल्हो छवादे ईश्वर, क म्हारो अकार
थार आडो नी आव, थारी रम्मत रीच म्हारी सारी जिनडी मे
सचर होवती र !
प्रभु ! मन इतर बधण ही बांध क म्हैं थार ही प्रेम जाळ म
जकडयो रैवू - म्हार जीवण म थारो ही मतवळ मघतो रैवै ।
मालिक ! म्हैं थासू इती भीख चावू प्राथना करू !

भगवान

थारो रूप पिछाण सक्यो नी प्रभुजी म्हारो प्यारो।
ठठारी थुडथुडतो जोयो कुडकुडतो क्वाळ आ रोयो
रोटी गाभ टूकअन दो-हो, भूखो राढ बोकनै घोयो
सूग-भीट मिण होया न्यारो-प्रभुजी म्हारो प्यारो।

कोढ रोग मे गळतो-सडता राम नाव ले चढतो पडतो
नाक भींच म्हे आख मीचली, गाळ ठोक्तो भूज्यो लडतो
लाग्यो मनै घणेरो खारो प्रभुजी म्हारो प्यारो।

नैण गरीबी न्योरा करतो वण मधुर तन पीडा मरतो
हँसी मसकरी-नरी चिडायो, पण वो तो हो आसू भरतो
म्है वद वाया गोबर गारो प्रभुजी म्हारो प्यारो।

दुखी उवाज पडी काना मे, गाळ निकाळ कडी ताना म
भाठा मारघा ठोक भजाण्यो, तीज्ञ वडघो म्हे तखाना मे
हिडद सूक्यो सोच-विचारो प्रभुजी म्हारो प्यारो।

दुखियारी दुनिया रो छावो, सास सुण्या नी रयो भुळावो
म्हारै मन, तन घन रो पडदो, अगी मीत जगत चित चा नो
अणदेख्यो वर साच सितारा-प्रभुजी म्हारो प्यारो।

छेनड समै याद जद आयो, पण वो बानक रूप विलायो
म्हैं भोळो अर मूरख मानी, खोयो रतन अमोलख पायो
हारचो चूक्त सरब जमारो प्रभुजी म्हारो प्यारो।

दिव्य दिखावै माया न्यारी, म्हारी परणो काय क्वारी
भरम भचीडा भूल्यो भटक्यो, मोज कम्‍ सदिया सू वा री
वद होवै म्हारो निस्तारा-प्रभुजी म्हारो प्यारो।

किरपा वारिद

म्हारा जळद देव ! म्हारै मन रा मालक ! म्हारा हिवडो सूवो
वराण पड्यो है ।
वरसासै अठै गाज घन नहीं वावड्या । खितिज रो उघाडो डील
घणो डरावणो होग्यो है । कठै ही वादळ री फिदकी निजर नी चढै !
म्हारा सिरधणी नीरद ! था चावो तो पलक मे खलक डुवो नाखो ।
आंधी-पाणी अर विज्जुराणी र कोडा सू आभै रै दोनवा पासा नै
भरपूर पय कपाय देवो ! नारायण, या निरदयी गिरमास जका
म्हारै हिवडै
नै घणघाती निराशा सू मुळसा रयो है, थारो पाछो ले जावो ।
थारी दया रा जळघर पयोद, नीचै ओलरावा प्रभु ! जिहाल वापरै
रोस भरिया लोयणा –
सू टावर री मायड़ आपरा झरता नैण नीचा भुका लेवै
अेकरता विहाल ओमरो निम्मर नाथ ! किरपा करावो !

काळी काठळ

हरि ! म्हारो हिड़दै आज वळायण री गाज लै वगी ।
कुण जाणै किरपा निधान, वा काळी रात कठ लजा नास
मेघ मलार री वाजती वीणा माथै वै री चोट वीजळी सी पि
हिड़दै म व रा अजर सरगम वज्र ज्यू गरज !
टोबा री बतारा जळद ऊमट-उवार घणघोर
अधार मन चपट लै लपेट्या है ।
मतवाळी वाय कुदड़का मार अर म्हारै सग
मेघ रग वेय उडती वग !

हरयो खेत

आज हरिया खेता मे छावला आवै
आभ लील गळ, वादळा री नौका कुण चलावै ?
आज भँवरा फूला नी बैठे, थारी जोत किरणा म
मतवाळा ऊँचा उडै-चढै !
चातकडा रा जोडा, मरिता रै म्हार कया भेळा होरया है ?
साथीडा आज म्है घर नी जावूला ।
आज म्हैं आभ थाड विश्व विभव लूटणा चावू ।
आज समदरिय री उछाळ मे झाग वणावू, झझावात–
हरखीली हँसी हँसै !
आज वेवज मुरळी वाज सारा दिन म्हैं वं मे ही लगावूला !

भगवान ही जाणै

प्रभु काई है ? म्हैं कवणो चावू अर
म्हैं बतावू म्हारै जच्यै री बात,
हो सकै म्हारै जंची बात ठीक नही हुव ।
म्है या कद कवू कै-दूजा रै जंची साची नी है !
मनै न चो है–भरोसो है, सस जावक नही !
म्हैं इण बात मे करडो पडू-म्हारी आत्मा गवा है !
पण दूजा री जंची-क्ही बातडी कूडो कया बताव ?
इसो मनै किसो इधकार है क लोगा री बात न विसरावू !
प्रभु काई है ? आ शब्दा रो उथळो यो है कै—
'आ बात तो भगवान ही जाणै !'

मिलणै रा सासा

म्है इय हाल मोद मनावू
म्हैं थारी उडीक राखतो रव्, अेक निजर जोवतो रैव्—
वो थारो थिरचक गैला, जठ छिया, च्यानण लारै लफै
अर वर्षा उन्नाळ लग फैफे ।
सून गिगण सूं सनेसा ल्यावणिया उवै पथ
हाफै आवै, म्हारो सम्माण कर अर तुरता-फुरत उतावळा—
वूवा जावै ! म्हारो हिड्दै हरखकोड बोढ ज्यावै अर मनै
थूवती वगती वाय मिष्ठ सास छाड ज्यानै !
थार फळस दरूज दिनूगै सूं आथणताईं याही आस लिया
बठा रैव् के कदे मदास अचाणचक ही उवो दविक पल आ
जावैला
जद थारै सूं परतख मिलणो भिटणो हो जावलो ।
जद ताणी म्है अेकला बैठो कदी हैंमू कदे गाव् । इण समै—
भेती मक्ष पितावो, म्हार नड निडास री हवा, मिलण री
सारमाशा सेती सासा डव्राडाळ है ।

हलकारा री हाक

माधव ! थारो प्यारो हलकारो म्हार नड क्द मेलाला ?
उवो मौत रा माप लिया आवैला म्हारा सारा झूठा झझट
जद झटक वट जावला !
म्हारै घरा उतरघोडा वटावू मन आंग्य दिखाळ डराव
रोब जमावै । उवै म्हार मन री खिडकी-बारी अर अ तस रा
किवाड सभडय जड देवै !
दूजो लोक नी मानण खातर सागीडा जब बाध नारा,
ब प्रेम दूत हलकारा आवला !
म्हारा आसा बघणा ढीला हो जावला
सग अडकास मिट आवैली अर वारै आगमण लार
मनै कुण घर री मीता मे र्हाड घुटा रासलो ?
उवै आव सा अेकला चाल र आव !
वार कठा फूल माळा हालै उड
उण्ही माळा सू था मन बाधोला ? म्हारो
हिडद अपणै आप चपचाप चाल पडैला !

अणहुता सपना–

आजकळै थारा सपना डाटा आवै ।
ठा नी, साढा वठै सू आय'र सूण-वसूण करै
म्हारी नींद विडार पाछा जापरै ।
म्हार काळजै करळ-भरळ माच ज्यावै
पण जागू जद की नी दरसाव ।
एक रात अछट नींद भगवान गग गाभा खीच्यो–
म्है वपडो वाठो पवड जर गळूडियो मार लियो ।
प्रभुराम शर्मा सिरखडी परिया वाही
समझी घणदेवाळ री वलावट आई ।
दिनूगै उठयो, की न काई थारी आजू समाई ।
जिनडी हरदम मरण विसरण र डोलर हीडै चढै-कढै,
सिवाय इणर जीवण रा कोई रगडो नही है
पगडो हुव झगडा मुकै थारी जोत रै दरसणा मौत रो भो नटै ।
भखावट गग शर्मा सग आप-आपरै ठौड ठिकाणै लागै ।
पण कुण छोडै ? जीवडो चोढै चाल ।

सुमन सोचणा

सांवरा ! थारो हुतो सुमन हूँ
मस्तक माथ रग रासू हिड्द सारम अर पराग !
म्हारो सेवा रो स्हावो स्वीकार नैं पूजा लेवो परमेश्वर !
म्हारो उपयाग हम्भैं लेवो !
म्है फूल ! झरू-मरू, फूल फ्ल र पथ्वी पड
रेत न रळ ज्यावू ?
ताळ नीं लगावो त्रिभुवनपत ! मन ताडल्यो मोडा मती करा !
कुण जाण ? थारो माळा रा मणको-वणू न वणू ! सा-
आपसारै श्रीकर री तोड ताक्त सू ही मन भागवळी वणावा !
कटको बोला नाथा चटका करा ! दिन ढळ रयो है अघेरो ऊवक,
थारी आरती रा म्होरत टळ नी जावै ! इण भव रो
यो ही भो है–वेगासो चूट लैवो नाथ !

मौत री मेफल

कुण कै ? काळ आवैलो अर चोटो झाल खाली हाथ साथ लै
जावैलो ।
जलम्यो आयो, रोज राग ल्याया, करैंगो-भरगो, साग सागी
अटवर लिया मरैंगो !
ससारी अखूट खजान माय आय'र छेक्ड
ठाली हाथ कया जा सकैंगो ?
साथ लैजावण जोग जो की थार द्वारं है वा सारो अळो थळो
अेकठो करन दाव जूड, ढिगलो ऊँच चाल !
पण वेकामल कूटळै रा येड भेळो कर मेल्यो है तो–
तुध नै तूळो दिखाळदे ।
अवनी माय जिहाल ओपतो आयो-विहाल ही
सोभतो टुळव टुर चाल !
काळ री कचेडी अर मौत र मक्म, भोपाळ वेश भूपा
धारण कर ओढलै अर
मुळकण मलवा मुड वहीर होज्या ।

बुरघोडो धन

पाछलै प्होर मौत फळस आ वडैली
   थारै सू वैन थाई उपहार दिया जावला ?
म्हारै प्राणा रो रतनागर ववेिध्य वानो वट्टै
लाखीणा जवा राता सू भरिया है-वा नै सरव चढावो घर देस्यू !
जकै दिवस मौत रा दूत बारणै आवला
उण सम वानै खाली हाथ नही जावण देवूला !
धाळै उनाळै, पाळ, दिनग-आथण, अधार च्यानण
रजनी रूपवाडी रा रसीला पुस्पा रा भडार, म्हारै जीवण वरतण
मे भरिया है, सारप-दारप, छिया-तावड रा भात-भतीला
फूल पानडा सू म्हारो अतस सज्योडो है, बाकी
जितरो बच्यो-ऊबरघा धन माल म्हार कन है
जको ही म्है इता दिना म भेळो करयो है—उवा सारो
जोडघोडो धन सुहणी सजावट सार, म्हारी जिनडी री
आखिरी जातरा रै वखत जद मौत म्हार दरजै
आवैली, म्है कुणचुगणापणो छोड चाढियो थाढ
वै रै आगी खिणा-मुधा देवूला !

याचना

भगवान ! अब म्हारी उफणती विडम्बणा मार !
थारी भक्ति वत्तो स म्हारी कूडी कास निवार !
आपरी चरण रज री गरद में मरद वणनो चावू ।
सैलावणी लालसा रो पुरजियो उडतो जावू !
म्हें म्हार अहम् म भँवाळी खाग्यो चत्रावार
भगवान ! अब म्हारी उफणती विडम्बणा मार !
म्हे जगती रो जीव थारै परम पगा गुड पड़
भगवान ? इण भो र खोट खगधा जुड-मना सू क्यिा लड़ ?
म्ह मालक मान अठ निव थुक घर-घर घणो काप्यो
श्वान मन वाग अवरा ओग भोग घाप्यो ?
म्हार जीवण घघा घुखणी झळ अपार
भगवान ! अब म्हारी उफणती विडम्बणा मार !
म्ह म्हलीण कीट, मुरधाति मागू था सू
थार खजान किसडी कमी ? ग्यान ज्योतिस पूछो मम आसू
म्हारी अतस निशा नास, च्यानणी चास प्रसार !
भगवान ! अब म्हारी उफणती विडम्बणा मार !

I

दिली दोस्तो ! थान वताव् कै जावू - सानेली कामना करो !
आभै सुधिया री ललाई सोभै - म्हारो रास्तो रमणीक रीफ
मनै ना वूथो कै म्हार वन विसडी गैला खरची है !
छूछ हाथा पण आशावत हिड्दै सू म्है जातरा पळाई है !
म्हारै ब्याह रा वधवो वागो म्ह पैरया चालूला
जातरा री साधारण वर्दी नही मसूमल अदी पोशाक आपैला !
रास्त मे ध्यारी घणी है—भळे ही म्ह निडर वगूला !
जातरा रैं परल कराडै सिझ्या रो सितारो,
म्हागे स्वागत करलो अर राज द्वार
साझ री शहनाई म्हारा अभिनदण करसी !
मनै हूम्मैं ऊँट माथै अडोळ नी माडणो है, अर अश्व ऊपरी
काठी नही पलाणनी है—पर प्लेन सुर विमाण स जाणो है ।
हाय रे ! हरामी समै, जगत जञ्झूवा ही दिवस री विल्खणी वेळा
जारी है !
मधुमास रा फूल खिल'र मुरझाइजग्या। म्ह उण्टी मूवयोडा फुलडा न
उठ वीणतो, किणन उडीक रयो हूँ ?
लहरा मे हाको हवै अर कराड री काळी वृज - गळघा
खडखडाता पीळा पानडा भड-पड लाग्या !
थू कुणसी विन्दु माथ नण लुभाया ऊभो है ?
धन काई इण वगत वायर र रू रू म मिली गिली हुलामी अणभ
नी हव ? ज म उव तट र गीता रा म्वर मिल्योडा है !

परभो रो भागी

अविनाशी ! थारी भवाली नैं म्हे अणाद सम सूं भाळू, जाणूं कद
वेअद,
थे इण जीवणी धारा म मनै निरवाळो छोड'र वूवा गिया !
परमात्मा ! था, तो म्हारै वास्ते घरा अर परा-अणगिणत आणद
उधाया,
म्हैं मोकळो विरिया मेवुला री ओट - थारा मुळकणा होठ
दीठा अर घणी वेळा लाल रश्म्या म थारा मजीठा चरण
लूटघा ! म्हे म्हारै माथ दोलटा घनी हाथ धराया है।
आणदघण ! तेलडा लाव, समसार घोव, म्हे थार अरूप रो रूप
म्हारी आख्या मे सजोयो है !
इणै री घडी ताईं थारी सळपळाट सरवरा मस जुगा रैं
सुग दुरा री चटव चेतणा गाण प्रम म्हार प्राण, रू रू रवास
रम रिया है ?

तडफ

हृदयेश हरि ! म्हारै मायलो मन विगसावो ! धुवावो, उजाळो,
सुहणो, जागतो, निडर, त्यारगो, वे झिझक अर
आळस वायरो बणावो वावा ! पछ
आत्मा जोग ओपती जाळी री चुनडी ओढावो !
अलख निरंजण ! म्हारो अंतस सुधारो !
म्हारो अंतर आखै चराचर रै बरोबर
स्वतंत्र समुन्नत साख साधो !
म्हारै सारै कारजा थारा प्रमोद गुण गान भरीज !
थारै आपरै चरणारविन्द ऊपरा म्हारो चित्त टिकावो !
मन खुश करावो आणदी उर बणावो
हे अक्रोध ! म्हारै भीतरला भाग एक ध्यान राग प्रगटावो !

तेज ताकत

सविशेष । थारी भेट म्हारै नेडै आय अनै पूठी थारै नजीक जा परै,
उवा म्हारी सारी चायना री जुगाड़ बेठाती संग कळा वापस सिधा
जावै ।
सरिता री निरंतर वगणी जळधार म्हारा खेत सींचाणै पछै
थारा चरण पखाळण ओठी वुही जावै ।
सुमन आपरी सौरम सू वाय इत्याद नै सुवासती वणाव-पण,
थारो ही निसाणो थारै चरणा चढण रो ही हुवै ।
थारी पूजा दुनिया नै दीन नी वणाव, थारी भिग्या, भिखारी नै
कंगाल नहीं करै ।
कवि र गीता, लोभी लोग आपरा मन चाया भावा रा प्रतीक मानै-
पण वारा एकटक निसाणा—थारा ही इशारा कर ईश्वर ।
थारा ही तेज ताकीजै ।

लोक चराचरी सभा

गुरुदेव दाता । म्है अठ थारा हो गीत गावण आयो हूँ
सवग्य ग्याता । थारी तीनलोक चराचरी सभा मे
मनै गावण री छूट दिरावो दयाल ।
ससारी कामा सूनो - मालक थारी माळा मोयो मूयो ।
म्है थारी लोकेर दूज कारजा लायक नही—सफा बेकामल,
म्हारा बेकार प्राण आपरै गीता रै सुर म ही प्रगट ।
सणक मणक रात, बेवाव वेळा म्हारै मन-मिन्दर थारी आरती हुवै ।
इसडै सम स्याम । मन गुण गावणियो काम भुळावो श्रीराम-हुकम
दिरावो ।
प्रभात विरिया उषा री सुहणी वीणा रा सुतार बाजला,
जद थारै सम्मेलण—मजलिस गीत गावू इतरी भिन्या थासू चावू ।
सावरा गिरधारी-थारी लोकसभा म मन गीत गावण रो माण
प्रदान करावो किरपा देवाळ ।

बोलारो

प्राणेश ! प्रळै सू पैल्या म्हारै मिलणै वेगी
थारी जातरा सरू होई !
थारा सूरज चाद थानै म्हार नैणा सू ओल्हो नी दी हो
सो—
अणीमीत री ऊगती-विमूजनी विरिया म्है थारै चरणा री उवाज
सुणी ।
थारा वेलचिया हलकारा म्हार हिवड मे मौन नतो दे ज्यावै !
हे पा वणा ! ठा नी-कया ? आज म्हार जी मे डाढो कोड भरीज्यो है
अेक अनूक्षसी थर्राट, म्हारै हिडद मे आ वसी है !
थाइठा आज जावण री पुळ आ पौंची है ?
थाइठा आज सग काज पूरा हो चुक्या है ?
प्याराजी ! थार आण रै लगाव-भेळ
वायवेग मे जको मीठो वसत सास भरीज्यो है
उवी मनै वताव क ये म्हार जावर नडा आ खडघा हो !
अमाप हरस, आग अेक गावणो गीत ऊरलैजी-वेगाँरिया वाल्म !

चन्दणियां साजन

जीवडला ज्यानी चालोसा चितारो व्हाला वैण
रग रसिया राजन हालोसा-अडीक सुरगा सण
वींधा चौल वीसारिया कियो कसूतो कार
मौज मज जग मानख हुई जमार हार
ळळवळिया लझा लालोसा गाडी लागी है लैण-जीवडला

नीदडली म ढळ चली रात गई अधरात
साथी सरव सिधाइया अेकलडा परभात
ओळगिया मारू मालोसा-उघाड उणीदा नण-जीवडला

चोरा रा चाळो अठै रखज्यो माल सभाळ
आखा सूरा-देवडा गया गरथ नै गाळ
मदछकिया मुजरो झालोसा-भुलावो रळपट रण-जीवडला

मेला म फँफता फिरो रास रळायो मन
दिलधारी नै भूलिया खाय वधायो तन
किरतविया कमधज पालोसा ! हो, उतरयो सुथरो सैण जीवडला

धमाचौकड़ी

म्हैं जरा गीत गावणा चावतो–नी, गा सक्यो !
मनडै न समझाबू–सागी गीत गावण री जी मे है
म्हैं सू आज वाक्य सफा नी वण्या, खुडावणा शब्द गुडया-पडया
म्हार प्राणा मे गीत गाण री उमग तडफ्ती रयी !
पुप्प खिल्या-पागरचा नही हवा साथै हालता रया
म्हैं उवा रा बोल काई सुणतो ? दरसण ही नी करचा
हर पल हळवी चरण घमाघम सुणतो रैवू
उव प्राणद-म्हारै दरुज र सामणै सू आवै-जाव !
म्हारो सारो दिहाडो वारै सम्माण, गलीचो विछावण मे बीतग्यो !
घर म च्यानणो नी हुयो हम्मैं वानै क्या बुलावू ?
वा सू म्हारो मिला-मिटो नी हुयो !
पण व आवला, मिलला-याही अटूट अभलाख
म्हार जी रसी-वसी है !
आराध्य ! म्हे थारा श्रीमुख स्वर नी सुण्या, पल पल पूजमाण
पगा री धीरी धमाचौकडी सुणू !

विरही आत्मा

दरसदयो लील तम्बूवाळा, चिलत करो मत चाळा जी
दरसदयो लीलै तम्बूवाळा !
जळ विन तडफ मर सट सफरी, लायण वुझ भुवाळा
ज्यू ही जीव उजाड विरहण विलप आत्मा बाळा—दरसदयो
वन वन फिर वावळो मिरगा, उछळै ऊची छाळा
सूघ घास वास नी लाघ खोड तिर तिरवाळा—दरसदयो
पिव पिव रट पपइयो प्रमी, स्याम स्वाति जी जाळा
विरह दीदार गिगण लँफ देखै पळका पुळक पियाळा—दरसदया
जुग-जुग ढूढ फिरी जग जोगण, ओगण आळ पताळा
पण थोगण पग थिग-थिग थाक्या नाथ लुक्या नखराळा—दरसदयो
पापी जोयो बुवध कळापी, व्रिह्म उधारण वाळा
छंती रीज छोटिया तीखै रीझो राम रखाळा—दरसदयो
चिलत करो मत चाळाजी, दरसदयो लीलै तम्बूवाळा !

धणी बायरो मन

म्है अब इण सौरम शून्य वाय मँझ किणरा पग
लिया बेजफ जगळ मध्य वग फिर रयो हूँ ?
इण धूप धधक्तै लील अम्बर बीच किण रा दर्दीलो रोज सर होरयो
है ?
घण दूर-दराज उमडतै खितिज गाण—म्हारै उर म थुडयुडतो
उठाण किया उपजादो ? आज म्हे इण गध विहीण विधवा वाय म
वगतो किणरी खोज करू हूँ ?
म्हैं नी जाणू कै इण अमर वन उर किसडै राग माथ विमुग्ध
होय न या जोवनियो नगो जाग ऊभो है ?
आज वासती फोगलै री सौरम माय नूवा पानडा री
पळ-पळाटी सुर रागळी रीत म विधु किरणा इमी झर
सरगल आभ दिल आसुडा र आडग-भरियै स्पश सीनै
किसडी वस्त है, जिण सू-महव मून विधुरवात,
गद्गद् डोळ खडखडाती खडी है ।

किरपा

सर्वोत्तम आणदघन ! म्हैं जाणूं, म्हा माथ किरपा है
जद फूल पानड़ा मिस सोनैली किरण चमक
य सू आमूधा मेघ गिगण चढ्या घूम मोरमगणी ह्या म्हार माथ
जळ कण गिडा ज्याय ! है अवतारी आ सारी थारी किरपा है
आज सुधिया री प्रकाश धारा सू म्हारा नायण सवाल्य कुठं
या थारी किरपा है जद जिनड़ी री रूपाळी रंग-धर्मी !
थारा श्रीमुख हठ दिठ, थारा नण, म्हारा नैणा सू मिलजुल
म्हार हिड़द याग तरणा न छू लिन्हा है ।
अवयणीय ! जाणूं आ थारी महती किरपा मुलमात है ।

शुभभूयात्

हे प्रयीराज रतन । गांव मू गया आपर नेड
म्हारी वुद्ध इहाल सिरवज्यें, जिहाल वाजारू भोड म-
महा नगर री छोड वढती मारुति कार, वी जरूर वाज सेती
तत्काळ छतरगढ वलवट्टेट पोंच ज्यावे ।
थारी गाढ गभीरता र वेग, मम छिछळापा ऊभो तावें-पावें
वजन नें ववजन-सरन जन प्रसन्न मन भेळा ।
शुभभूयात् ।

प्रेम झारो

अनिवचनीय ! थारो ईंमी रस प्रेम, प्राण गाण, महक उजास,
पुळक सरुप थोक आखै द्युलोक सू झरै !
आज दस दिसावा रा वधणा पुलग्या। उवा सुधा ईंमी दसू–
दिसावा सू आणद लहरी उछाळा वग।
म्हारो जीवण ही ईंमी आणद री पियूप धारा सू दूध पाणी
होग्यो है !

म्हार प्राणा मे कल्याण भावनावा रो निखर, अपरोख आणद री
तेज तरगा मे कमल पुष्प री भात खिल रिया है !
उव रो सारो मिष्ठ पराग, परवारो था चरणा चढावूला !
म्हारो हिड़दो नीरव निहारो, थार अमर आलोक ऊभो है !
म्हारा प्राण, कसूमा उपा री लाली स रजणपूर अर अळसाया
लोयणा रो चसमो चकनाचूर है !

ऊँचो रमग्यो

म्हारो,हिवडा हम्मे वादळिया रै साथै उडग्यो
कुण जाणै या उडतो-मुडतो कढै जापर ?
वादळा री सारगी र तारा माथ उणरी पीड रा घमीड
प्रभु ! दामण री भांत दमकतो पड !
अतस मे उण री ताना कुलिश री तरा गाजै !
टोळो री ढाळी रा वादळ फिर-घिर घुटै-जुट
वार घणै सीलै अंधेर घाट मनै सांवट लियो है
मतवाळो मद समीरण नत्य मगन है–वा ही म्हारै हिवडै सग
वादळिया रै अग उमड रयो है ।

जाण-पिछाण

कितरा अळगला अणजाणा सू मन मिलाया
किता ही पारका घरा मे मन रवण री जागा सूपी
ईश्वर ! थू अळगला न नैडा अर केड कडूम्व ल्या भेळ !
जूनी झूपडी नैं त्याग'र अजाण असद घरकोलियैं मे जावता
म्हैं कास उदास होम्यो क वठै म्हारो आपरो कुण होसी ?
असली वात ही विसरग्यो क उवैं नूवी ठौड ही म्हारै सध थारो
पूरवलो जिगर होवलो–जिण नैं आपरो मान चालूला !
ईश्वर ! थू अळगला न नडा अर केड कडूनै ल्या भेळ !
जीणै-मरण, नीचै-ऊँच, जठ ही थू मनैं ले जासी
वठै जलम जुगा तर थारी ओळखाण रो साथो रसी !
थान जाणतो थको किण सू अजाण रैस्यू ?
कठै जावण री पाल होवैला ? कठै डर भो लागलो ?
थू त्रिलोक चराचर भेळ जोड री रखाळी हत जागती जोत
ईश्वर । थू अळगला न नडा अर केड कडूम्व ल्या भेळ !

उपदेश दरावो

हे प्रभु यीशु मसीह ! मिनख पाप रै उद्धार वेगी आपरो उपदेश
चावै !

ज्यो जमारै रो आखो भार मगरा लादे उठाया वगै।
दाता ! वो थानै भूल नै घर-घर भीख मागै !
परमेश्वर यहोवा ! था सू काई छिप्यो है ? थारा नण मग ठोड देखै
थारो ग्यान-ध्यान, मनस्या अर भाव, म्हानै जाणै-पिछाणै
अर अमर सुन्नो वणाणे चावै
जाणग्या प्रभु यीशु ! म्हारो भार थारै चरणा नाख जावाला
वेफिकर धूम फिराला, कास-घुटण लार नी देखाला !
मोढ भार दहुया कुण चाल ? जद कै रुखाळी पाळ !
म्हारोडा कोझा कुलछा री हवा जठ-वठै जाय दीयो छुवै
उवै री ला झट बुझ ज्यावै।
म्हारा मैला-कुचीला हाथ है हरि ! चटावो चायै ना लिरावो।
म्हारी कुलखणी वासणा घणो काळी है प्रभु !
निमळ प्रेम भरया ऊजळा हाथा ग धन-पुन्न
स्वीकारो म्हारा परमेश्वर ! म्हारै उद्धार वेगी
आप उपदेश दरावो !

लोह किरपा

म्हारी मनस्या री लपटा लाम्बी लघी अणत
उवा रै लारै म्हारो रोणो घोणो सस कोसा गयो परा ।
नाथ ! मळे ही म्हारै नाक म सूतळी वटो नाथ-थारै हाथ,
मन राख होणे सू उवार राख्यो है,
थारी या कठोर करुणा, म्हारै रू रू मे सागी सूरत रम रयी है
म्हैं थारै सू गिगणधर-जोत डील उर आरमा इत्याद री
जाचणा नी करू-वाछा कोरी वाही है क मनै हर रोज री
लपचेडू लालसावा सू टळण जोग-जोत जोड देवोना
म्हारै खातर थारी वत्तो वडो दात याही होवला ।
थार लार म्है कदे जूझै अळस लोयणा अर कदी-अधजग्यो
नींदाळू झोकडी झोटा खावता थारै गल वूबो जावू ।
चाँदडा ! थ म्हार सामण सू अळगो जायन ओल हो ज्याव, म्हैं अ
गूझी जाणग्यो ! मुडदी अर इकोवडी वासनावा र जजाळा
उवार न थू मनै थारी पावाधोक र जोग वणा रयो है ।
थारी इण करडी कुरहाणी किरपा रो मम म्है चिह्न लियो
नाथ ! सागीडो चिह्न लिहो है ।

हियै च्यानणो

हे विश्व जीवण रा कल्याण ! मनै तो म्हारो काज, था सू ही करवाणो है !

म्हारी आत्मा मे उजाळो करो। विकसावो, विमल वणावो,
जन भावण करो-निडर अर तत्पर निरालस तथा दिढता भरो।
हे चराचर चिदाणद ! म्हारै हियै च्यानणो करो !
म्हारो अत करण जगत चराचर र माप उन्नत करो अखिलेश्वर !
थारी वलिहारी-म्हारा बधणा खुलावो !
म्हार मग सुकामा थारा हुलास भरिया गीत अगीरीजै !
थारा चरण-कमला म्हारो मायलो लै जा मोडो
मनै पुचकारो प्रमत वणावो !
हे जगत जीवणाधार ! म्हारै हियै प्रकाश विकसावो !

गीत गाणे अरजी

म्हू परवारो, जग सू खारो-आयो हू दौडयो द्वारजी–
प्रभु था घर हाळी म्है रैस्यू !

फूस बुहारो, छाणो लकडी चोको वरतण करिस्यू
घरा दुहारो, कूवै स्यारी दोघड जुड जळ भरस्यू
म्ह दरवारो-चेदर सारो, आयो हूँ दौडयो द्वारजी - प्रभु था म्हैं रैस्यू
बूजा काढ'र धान वोजास्यू निपट निनाण करास्यू
लाग लावणो खळा क्ढास्यू मिन्दर नाज भरास्यू
मैणतगारो सुध लखणा रो, आयो हूँ दौडयो द्वारजी - प्रभु था म्है रैस्यू
गार-गोवर चेज भाठ सारी चीजा ल्यास्यू
वेगो उठस् मोडो सास्यू ठडो-वासी खास्यू
म्है वेबारो हूँ चेजारो, आयो हूँ दौडयो द्वारजी - प्रभु था म्है रस्यू
भूख माडो बोल ना जाणू घर सू दूर नी जास्यू
विस्तर धोसू झाड विछास्यू चरण दबाणा चास्यू
खा सै कागे रैसू प्यारो, आयो हू दौडयो द्वारजी - प्रभु था म्हैं रैस्यू
हीडो करसू हाजर रैसू विडद वडाई गास्यू
निभय पैल्या वात खोलदयू सेवक नाव धरास्यू
है प्रण म्हारो दुनिया न्यारो, आयो हूँ दौडयो द्वारजी - प्रभु था म्है रैस्यू
भरो हकारो हेलो म्हारो दास वारणै बैसू
चोर-ढोर आखा ओलावू ऊभो प्होरो देसू
तज नकारो चाकर थारो, आयो हूँ दौडयो द्वारजी - प्रभु था म्है रैस्यू
मागू खरी मजूरी भगती दरसण परसण होस्यू
मोट घर रो नौकर न्हानो खाल खोरस खोस्यू
ली हो लारो हाळी थारो-आयो हूँ दौडयो द्वारजी - प्रभु था म्है रैस्यू

अरज अनुनय

हे आज रा नटवर नाथ ! म्हारो भव सुधारो भगवान !
श्रीमुख ना मोडो जमारा अळो जावै !
थारो दरसण म्हारे सफा नैडा म्ह नी जोया, म्हे कठ
दूजी ठौड देख वोकरयो, न जाणू कठ-कठै ?
विहारी म्हारी आत्मा मे विहरो-म्हार काळजे ऊडी हँसी री
जोत जळावा ! वावनावतार बोला म्हारो शरीर छूवो, थारोडा
कर-कमला सू म्हन नी, मैंन उवारो अविनाशी !
म्हारो सारो ग्यान धुधळो, हँसी खुशी भ्रामक
प्रतख दरसण दवो भरम निवारो !
भो सुधारो भगवान–पाप भोगणी शक्ति बगसो !
मिनख जमारो अळो जाव ।

शिखर इनाम

हे नाथ नारायण ! थे म्हारा गीता नै पुष्प भांत स्वयं विगसावो !
उव खिलता कुसुम देख'र म्हैं आणद विभोर हुज्यावूं अर
उवानै अपणी सपत समय, थासा रै चरणा चढावण रो
गुमान गीरवो लिया थारै नडा आवूं ।
था सू विणती है विभु ! क उवा निज विगसणा फूला नै प्रभ सू
हँस'र हाथ धसू करो हरि हर ! म्हारो आपो मत विसरो ।
पूजा रै पछ जे अै फूल, धरा धूळ मे मिलन
मर मिट ज्याव तो काई अडी नहीं ।
विष्णु हरि ! थे थार हाथा ससृति रो धणसरा द्रिब लुटावो
उण्ही कर-कमला सू अै सुमन मसळीज मर तो किसडो घाटो हव ?
अै गीत मेरै जीवण म पळ छिण विगस खिल'र म्हार प्राणा न
अैसाणमद वणा ज्याव मेरै येई यो शिखर इनाम होवै !

आता नेळो

भगवान ! थे मैं रै भेळा रैवो–मनैं ही सारा सायै जागा दिरावो !
जठै बैठण रो माल नहीं लागै, लोक काढ'र जागा नीं बाटीज,
जठ छिब सम्माण मे भेद नीं हुव, सरै मग, मगळा र नीचै
धूळ भरी धरण माथ मनैं ही बैठणदयो !
जठै कारी आडम्बर रो आबव अभाव, आपरी साची पिछाण
दे'र भर गरीबी मानणै मे हिचकिचाट नीं, वठै सडो होणै सूं
म्हारी नाम बायरी गरीब गिज, थारै अथाग दात सूं दूर हो ज्यावै
थेठ मन सगळा साथ ठोड दिरावो दयालु नाथ !

भाव वर्ताव

मनै यो उच्चारण करता थका आवणदयो, कै--'थे म्हारो जीवण-
थे ही म्हारा नाती, थारै मे ही म्हारै जीवण रो आखो आणद
भरयो है,
थे ही म्हारा निजू हो !'
मनै ईंमी भरिमा सुर दिरावो म्हारी वाणी घणी मिष्ठ बणावो !
म्हारा थे प्यारा हा-इसडी बतळ बता-आ करता आवणदयो।
या पूरी प्रथ्वी, सारो आकाश था सू भरियो डब्बाडोळ लहर था मे
बस-व्याप। इसी वाणी म्हारै माय सू ऊक्ल वढ, इसडा वरदान
दिरावो विभु !
म्हारी विपदा म थे मनै आवो, म्हारो म्हानवडो जमारो जाण
म्हार
सू स्नेह दरसावो ! बस, छाट मूढै सू आ बात करतै नै मनै आवण-
दयो 'थे म्हारा जीवण, थे ही नातीला अर म्हारा आपरा हो !'

ब्रह्मजीवी गीत

देवा आवू म्हैं गुण गावू-स्वामी सेवगियो हेत है-
प्रभु म्हारो करियो निस्तारो ।
सत्यनारायण नाथ निरंजण दुख भजण मो हारी
कमलापत थार ब्रत तिरग्या कोडा जग नर नारी - प्रभुजी कोडा
थे औतारी म्हे ससारी, स्वामी सेवगिया हेत है - प्रभु म्हारो निस्तारो
रतन जड्यो सिंघासण ओपे ज सुर गूज ऊँचा
कळजुग प्रगट वगो जग तारण काटण पाप समूचा - प्रभुजी काटण
पातक हरणा लिछमी रमणा, स्वामी सेवग रो हेत है -
प्रभु म्हारो निस्तारो
भगती भाव सदीनै कारण छिण छिण रूप सवारो
मनचाया फळ देवण दानी काज किरपा निध सारो - प्रभुजी काज
हद छिब राजै, बाजा बाजै, स्वामी सेवग रो हेत है -
प्रभु म्हारो निस्तारो
चढै सवाया भोग सावरा धूप दीप उपहारा
सरब सत तुळछी ल ऊभा आघमाण उणियारा - प्रभुजी आघमाण
थे हो म्हारा म्हे हा थारा-स्वामी सेवगियो हेत है -
प्रभु म्हारो निस्तारो
देवा आवू म्हे गुण गावू स्वामी सेवग रो हेत है–
प्रभु म्हारो करियो निस्तारो ।

निवतो माथो

हे ज्योति सरूप ! जठै ससू अधम दीन दुबळ जन रैवे
वठै ससू पिछड्या अर घणा मानख वायरा मिनखा बीचाळ–
थारा चरण कमळ विराजै, इ याव अभाव तथा रुदया रो बूटो
बाळो !
जद म्हे थाम् पगेलागणा करू, तो म्हारो निवणो माथो
निवणी लामी कावड पोंचतो हुयो ही थार चरणा ताई नी पोंचै !
वयू कै थारा चरणार वि द सेसू हीणा-हेठा मिनखा म रूप्योडा है।
म्हारो मस्तक निवतो-झुकतो ही थार चरणा री तह ताणी नी पोंच
सकै !
जठै थे गरीब-गुरबा र गरीबियै पहरास मे सरब दलित, सर्वांग
अपमाणित छेंटवा हीण-म्हलीण मिनखा बीचाळ गति माण रवो
वठै म्हारो खूटो अभमाण, ठालो ठूठो नी नावड ।
धन माण पूरता माणसा म थार मिलणै री अभलाख राखू
पण, थारो संचलण तो वासू है–जका रो कोई साथो नी हुंवार ।
गरीब निवाज ! उण सारा दळित अपमाणित अर
गरीब गुरबा सू ही हीण गरीब मिनखा ताइ म्हारो हिडद
हरगज नी पोंचै !
वान न्याय, समता, सुतन्त्रता तथा भायप थार सविधान सू मिल !

माईतपणो

मधुसूदन ! थारै माण, म्है अळगा रवू-अगळै नी वधीजै ।
मोटी अपणायत आण, म्हैं सू थार लव क्या लागीज ?
थान वाप जाण चरणा पडू-पण साथी समझ गळवाथी कया अडू ?
परमदयाल ! वात्सल्य वशात् थे म्हारै आपै, ऊंडै गलै उतर आयो
उवै माग थारै मन मितराई पिछाण'र म्है सू थारै साथै
दूर वहीर होणो तावै नहीं आवै !
भगत वच्छळ ! थे म्हारै माजाया भाया सू वता भीड हर हो-
भळे हो थारै भो, नेडो नी भिडीज !
म्हैं म्हारो मारो द्रव्य-अळायळो माई वीरा मे वाट देवू
अर थारो सागीवाळ वणणे वेग थारै स्हारै ऊभो हो जाव ,
क्या म्हैं सुख दुख रा सारा अवसरा मे क्दे पारका लोगा नी-
थारै साथै तडे खडे रवू !
छेक्ड निजू लामै डाड रो छेडो नी मिळै जद म्हूं थाक छाक जावू
पण, खोळियो छोडण री ऊव प्राणादधि मे डूवण री घरी-
गुचळकी चळभी नी लगावू !
माईता ! मोटी अपणायत पाण, म्हसू अवढ पथ थारै नडो नी
जाइजै !

कुढता प्राण

माईता ! मोटी अपणायत आण है !
हुम्म म्हारो जीवण थारै किरपावत नीर धुप निरमळ होग्यो है।
भोभा दळदरी हाथा सू म्हैं थारा चरण नी परसतो
पण, दया दाठीव-ढाव झूलनैं फूला री झाव भर ल्यायो हूँ
हे जीवनाथ ! निरसल्यो उवा काळी कोझी नी होई !
हुम्म थारोडा चरणा म्हारो सुथरो जीवण चढावूला !
पैल्या भो लागता म्हारा सारा अग रगदर रळया ,
आज आपरी उधारणो कामना सू महा कुढता प्राण निता सोरै होग्या !
ना नाथ ना ! हुम्म कदी इयानैं धूड-फूस मे नी मिलावूला।
मस्सा धोया है-जद थारै अपण जोग हाया है जगनाथ !

होड गीत

म्हे हा थारा थे हो म्हारा, माईत टाबरा साखजी -
प्रभु ! म्हे थासू के दूजा हा !
ऊँची-ऊँची मैडी थारै, म्हे देखण ललचावा
छानडिया झूपडिया म्हारै थानै कदे बलावा - सावरा थानै
बै गढ थार-अै मढ म्हार - माईत टाबरा
काम धेनुवा दूझ थारै, जारो नाव लिरावा
भेड बकरिया धीणो म्हारै माखण भोग लगावा - सावरा माखण
बो धन थारै-ओ मन म्हारै - माईत टाबरा
तोप व दूक तीर-तरवारा, थारा नै सिर नावा
जेई-गडासी, कसी कुहाडा खेत कमावण जावा - सावरा खेत
व रग थार अ ढग म्हारै - माईत टाबरा
हाथी घोडा, कार-विमाणा, थारा रा गुण गावा
ऊँट अलाणा-म्हार ठाणा चढ ललकार लगावा - सावरा चढ
थे गजधारा-म्हे वजबारा - माईत टाबरा
राधा-रुकमण था पटराणी, भोजन करण मनावा
भोळी-ढाळी, म्हा घरवाळी रावड-रोट रळावा - सावरा रावड
थे, म्हे न्यारा आपस प्यारा - माईत टाबरा
पलग, गलेचा, नरम गीडवा, थारा सदा सरावा
टूटी मचली, गूदड राली म्हारा पड पोमावा - सावरा म्हारा
थे हो भागी म्हे अनुरागी - माईत टाबरा
साखजी
प्रभु ! म्हे थासू के दूजा हा !

अभिवन्दण

अलखदेव ! म्हारो गतराडो गव थारी घरू नाळी-खाळी डुबावो !
म्हारो सिर आपरी चरण रज रियावो !
कूडी वडाई छाटतो म्हे सफा न्हानो कूडियो हो रयो हूँ
निजू कावड री फिग्णी फिरतो पळ-छिण छीजत–
खीण खोखळियो होरयो हूँ !
म्हार दिसी द्रुम न आपर लायणा र नीर सिंचावो घणश्याम !
म्है अठला पवाडा मे मन उयाड नी सक्यो
अमरथी ! म्हारै जीवण कारजा थारी अपणायती आभा उजाळो !
म्है थासू अखड शाति री भिक्षा मागू–
म्हारै जीवण मे थारी अडूड चडूडी चमक भरावो !
म्हार काळजै र पस रा निराकार निवासी !
म्हारो दभी दाग, निमर प्रेम पराग नणा नीर धुळावो !

नाव सुमरण

हे पारब्रह्म परमेश्वर ! म्है अघ गध मे बैठ नित नूवा पापा रा भारा बांधू पण थारो नाव नी भूलू । अह निवार हिडद सू भजू सो थार सू काई छानो है ऋषीकेश !

म्हारी विपदा पर थारो नावो कितो सुहणो लागै सावरा, जदी सुमरु !

मनै था सू मतवल है, जगत हँसै रुठै तो म्हारो काई लेवै ?

म्हारै मूढ थारो नावो ओपै-फवै सो म्है आणद मनावू !

थासू मिलणो सावटो पैडो है परमात्मा ! पण सुमरण पथ भाज्यो वगू !

मनै चेत नी राखू म्हारो अभमान मन सरसावै

इयै गूगळ गव सू उबारो अगोचर ईश !

चुगली चाटी सू पसवाड राख मनै ल्येयण लोळ वरदान दयो दामोदर !

म्हारी आरती थारी दया चावै-कोई मानै ना मानै, मनै जरूत नी, म्है थारो नाव निरवाळै अतस सू लेवू !

जीवण झूपडी

दुपहर देव ! म्हैं चाँनणो चावू ऊँडो दीयो वरू-वो विराट फूक
बुझा देवो-सो थानें म्हारी जिनगाणी री धुग्गो झूपडी रें
अधारें ही बैठणो होवला ।
म्हारी जिनडी री वेल जडा मूळ वळ बुझी
उबे री सूकी कळिया माय कुसुम क्या आवला ?
म्हागी पीड री चढावो-जीवण जित्ती सेवा
फूना री साजत, पूजणो ममा म्हैं कनैं वी नहीं
थारो पुजारी ओजू अण हायो वठो है, थारें तिवार भेळी रळण ।
वनैं नूतो नी मिल्यो ।
नगाडा नी घुरघा वाँकिया कद वाज्या ?
खाली लुडी रै वारण बैठो म्हैं रिणक्तो रोवू-क्या पुरार रैयो हूँ

चढती वेळा रा शब्द

जीवण रूप ! ज्योति सरूप ज्होड कमल रो मीठास म्है चाख्यो-
पीयो

अर जीयो सफळ वणा लियो है ! हम्मैं–
आगीन जाणै वाळै दिन या वात वता जावू कै म्हैं जको
देख्यो पायो, वरी वरोवरी नही !
चराचर र खेल घर में म्है अणगिणत खेल खेल्या–
दालडा चखा सू म्है मोकळै रजण इंमी चख चाटयो है ।
जको छू लेवणो डाढो दोरो कार-उवो म्हारैं तन री रग-रग लग
जगत रा प्राण गद्‌गदाया है !
म्है वन सभाळनो धनभाग हुयो हूँ ! इण वास्तै
म्हैं जावण र वखत याही वात वतावू क जो की म्है
देख्यो भाळचो है—'वो अमाप अर अनुपमेय है'
ओ कवणो ही म्हारो ओपरो शब्द है ! शब्द साचा–
पिंड काचा, म्हार जावणं री वेळा रा प्यारा शब्द है !

विदाई

जावतै री के विदाई ? साथिया ये घर सिधावो !
था जणा नै म्हैं न रोवू, वरकरा विसूणी खावो
मिल्या-भिट्या कोड भिट्या, साथ क्या हो वसेपो ?
सासडा रो आवो जावो आग पाछ खीच ल्यावो
चालतो आवै उव नै म्ह वरु नी नागवारो
आण जाणे सास जिसडो वण रयो है प्रेम म्हारो
थारो-म्हारो फिर-घम आपसी प्रेमो दुलारो
ठौड ठैरै वो हुवैलो कैद रो कीडो धुतारो
आवा जावी चालो आई जावतै री के विदाई ?

मौत रो स्वागत

आणदकद जगतगुरु ! म्हारै फळसै थारो कागदी परवाणो लिया-
काळ आयो है ।
उवा पुरजियो म्है वाच नी सकू पण, काळ वापडै म्हारै कनै
आवण वेव वो ळा ही समदर लाध्या है !
अमावसी रात म्है डरू-फरू हूं, पण म्है
दीयो सजाय न आडो खोलूला
वारणै वडत न धोक-अभिवदण करूंला !
किती वडी वात थारो सिफाई म्हारै फळसै आयो है ।
कर-बद्ध गळद्थ्रु, उवैरी पूजा करूला !
व र पगा म्हैं म्हारी भीतरी बुगचडी रो वडमोला खजानो
मेल दवूलो ! उवो आपसा रो वतायो कार पार पाडनै पूठो वूवो
जावैलो
अर व र पाछ म्हारी जूनी सूनी झूपडी मे म्हारो अेक्लो अेकार
थारी पोछडी-भेंटसार ऊवरचो पडयो रैवै ला !

काळ री भजन

ले जावू जीवण रा लोभी पा वणा इणी तरा आणा
ले जाणा मोह-यो मनडो सुतनडो ताड नी जाणा
रजतसी रात रग भाणी जगत परभात जागतडो
वरस सावणियै वादळ ज्यू निवत सूतै री सै लाणा-
ले जावू आणा !
खाय रोटी जो सोया हो नीद मजदूर उण जिसडी
सुधा सुध रळ ढुळ जद ही प्राण बेसुध वणा पाणा-
ले जावू आणा !
म्हारै हिवड मे काई है? दया उपकार परसेवा
साच सुख-दान देवो हूँ व्याण जुगती सू उठवाणा-
ले जावू आणा !
काळ ! आणँद उर झरण मद वायुज रै मोहल्लै सू
मीत, मन मीत वण आणा प्रीत पण गीत परवाणा
ले जावू आणा !
भोतेरा पा वणा आव अमर गुण ग्यान देज्याव
साथ मन म्हारो लेजाव करै लद सुधिया प्रस्थाणा
ले जावू आणा !
अतिथ्या इसजारी म आख अणगिणत नित हेरै
मिटा भो-भूत भावी रो सत सुख शाति उपजाणा-
लेजावू जीवण रा लोभी पा वणा इणी तरै आणा !
लेजाणा, मोह-यो मनडो सुतनडो तोड मत जाणा !

जमारै री मांग

बद सू दरसण री अभिलापा, अणहोणी काई बात गिणो
म्हारै माथ रा मालक हो, क्यू रोस रीस सू नाथ तणो ?
आभो धरणी थारी निजरा कोडी-कुजर पण थे पाळो
थारी महता सू मिल्यै-जुल्यै इण दुखी कीट नै क्यू टाळो ?
पूरण परमेस्वर थारै तो-है, शेष नाग सिर सोणो वो
पण थारा दरस मिटाद्यैला-म्हारा भो-भो रो रोणो यो !

वोहो आवै

सुणो तो - पग वाजै, कोई आवै - वो ही आवै
अरे ! थानै सुणीजै नही - कोई आवै - वो ही आवै !
जुग जुगान्तर, मास - वत्सर, अहर्निस, पल - छिण
उणर बिना, कुण जाव-कुण आव ?
मन री लैरा रै वेव वध, म्हैं उणी रा मोकळा गीत गाया ।
उवा सगळा सू आछी धुन आई - गरिमा गाजै, कोई आवै - वो ही आव !
मधुमास, हरिया रास, वो वन पथ सू पधार ।
भादव री अंधारी रात - मेवलिया र उडणखटोल चढ्यो आव
दुखरा वादळ गरजै - म्हा सिर बोझ नी, चिदानदी चरण राज !
म्हारै मन वन, जद सुख उपाड खावै
उण्ही चरणा रा अखु गिलगिली कर !
वा चरण ध्वनि म्हारै उर - धर री धडकण है ।
कठै कुण आवै ? नर रै नैड - नरहरि आव

आपो इधकार

उव रोज वै म्हारै घरा आया, बोल्या—
'थारी सूथी वाखळ मे बैठा !'
उवा क्यो—'थारी देव पूजा देखाला, प्रसाद पावाला अर
दूर ऊभा खुशी होवाला !'
इण्ही वादै, वाद-कीचड मरिया दळदरी फाटचा पूरा कोफा
करमीण
म्हार घर री वाखळ रै खूणै मे बैठ्या,
पण सिन्या पड्या व प्रवळ हो उठ्या, म्हारै पूजा घर मे
धिगाण आ वड्या अर उवा मैला-कुचैला हाथा स देव हरि
वाळी पूजा री सामगरी खोसली ! हीण - म्हलीण वेश
व म्हारा सुलक व द्य खुदा, खुद हा, म्हे मोडा जाण्या !

आज रै वर्ष नै

ह त्रिपतादायी वष ! थ घण वसत जप जाता जनादण रा
अपमाण ररघा - व रा चिम्यो ही वदळो मिल्या है थन !
जप र मिनसाप र इधवारा री टाळ - अवग्या करी, जिणानै साथै
वठण रा माण नी दियो, वणारै अपमाण रो वदळा मिल्यो है थन !
मिनख न हाथ लगाण जोग नी जाण, थ मिनरा म वसत देवतारो
अपमाण करघो ! हम्में प्रजापत र मेद भर्यै दुरभख दरज वठ
थन सर साथ अन्न जळ रो सागीवाळ होणो पडै । या थारी बूडी
टाळ- अवग्या रो डड हवै ।
थारै ऊँचे घरड सू थ उणान नीच नाग दिया - उणारो
तारत रो अवरासो नहो लगाया ! हम्में थू हैठ जा पड
नही ता थारै वचावरी जावक जमेदी नी है ।
जघा न थ नीचै नाख्या थै थनै ही हठ बाँध्या है,
जवा नै थ धवरा मार लार काढ्या, उव हम्में थन लारै खच !
जदी थारो भलो ऊँचापा चाव तो पल्या उवा रो ऊँचापो साज,
यो ही थारी कुबधी टाळ अवग्या रा वदळो हव ।
अग्यानी अघेर घाट र पडद मे थ जना न रहोड राख्या
वणा ही थार शुभ गल मे जड झागड बिहड साडा ररघा है ।
सइकडी पीढया सू थार काध अपमाण रा वेथाग बोझ लदयो है
भळे ही थ जनता जगदीश न पालागण नी करयो !
हम्में उण्ही हीण गरीबा रो भगवान थोमी माथ आ ढूक्यो है !
उवै म्हारै लोयणा विराजै, ओजू थन दीस्या नी काई ?
थार जात पात रो झूठो घमड म्हावट गाहीजग्या ।
थू ससू लार ! अर यार राख रचाव नगी—
वध् बूडै गुमा र री लीकट्या पीच माड ?

फूला री खेती

हे अजर अखड़ी ! म्हे अफड़ी नी, म्हारी तो पगयळी ठडी है !
म्हार घरा इसो थान - मकान कठै ? जठै थानै अेकलवाणै
पड़दै र ओ लै राखल्यू - पूण ब्रह्म ग्यान-ध्यान !
म्हार हाय किसो माण - जको म्हें देवमाण दरसावू ।
हे करुणा निधान ! म्हारै कनै कोई इसड़ो वस्त नी - जका थारै
अध्य जोग हुवै !
काई इसो चढावो नही-जको थानै चोखो ओप - रुचै
वडो हैरान हूँ हरि ! थामे प्रेम ओलर जद–
सारगी री तार - झिणकार आपो आप झणझणा ज्यावै !
म्हारी गुवाड़ी री वडो वाखळ मे सतन हितु ! थारै आणै रै
चाव - उमाव फूला री खेती ललाह जावै !

काळी लकीरा

भूंडा लीकपटाळिया लपसू फेरू, पोतो देवू !
जिया-किया, म्हार मन रो, तन अर धनरी काळी कामी लीकटया
मिटा देणी चावू ! म्हार मन या ही लगन घणी तक्डी हा रयी है।
जी माह जाणू - लीकलकोळियाळी वासी वासना री वही
वास्तै में नास लापो लगायदयू, यो कचरो ऊंडो कूवै में उसेरदयू
तिथा गठडी बाघ थार चरणा चढादेवू देव !
जठै-कठ जावू - अै घमड री लिडायली लीकोळ्या लारै लागी र !
जठ जाय वैठू-टिकू, अ वडपण री भूखी, कुचरवी कुचाल
खची रची आपरो डोळिया दिखाळ वोकरै !
लाज मर ज्यावू - माथो मुका लेवू
अै डवकती लीकटया-वचळका नाखती रवै ! इयानै सफा साफ
करूलो जद ही थारै पूरमपूर दीदार रा दरसण होवैला !
हम्मै म्हार गरवोल गूग भाड न रमेश थारी सस पगी रज रळावो
नाथ !

छिणगारो अवसर

यो ता मनै ठा ही है कै अेक समो - वो बुममो वणज्यासी धरणी नी दीसली, आंस्या जाजक चुधिया जासी-वणजारी जीव, टाहा लद टुरसी । पण, सूरज चाद-सितारा यो चकासो देखता हँसला ।

सूरज री किरणा आपरै उगतै सम आय खोज अनै खबर लेवैला । समदर री लैरा दाईं काळ घटिया रो आन-जाव रैवैलो अर उवा सू सुख-दुख रा ऊँडा सास ही कढना ।

म्हैं इण काळ घडिया री आगूच कळपणा करू तो समै री सीमाती गाठ खुल ज्याव अर म्हैं मौत रै च्यानण स जगत र विगराव पडयै धन माल री अभिनव आभा देख । इण री माडी मठो छोटी सू छोटी जागा अर हर ओछै प्राणी मे ही मनै चकासो दरसै ।

म्हारी वासनावा री दुनियादारी अर हाय लागी जगती री समृद्धि अेकूक आग हाय कढ-जावादयो । म्हारै नेड वस, वो ही रैवणदयो-जक नै म्हैं की नी जाण्यो, पण-उणर लार लालायत ताघतो-लाधतो तडी देतो रयो, वो उवागळ अवदीप ओसर ।

जीव चेतावणी (भजन)

जीवड़ा हरि चरणा सिर धार वडा है वे करणा आगार
मना रे प्रभु चरणा सिर धार वडा है वे किरपा आगार
टेर – बाळपण में खेल्यो खायो भूल्यो फिरचो गँवार
नानी री कहाणी रम रीझ्यो लाडा कोडा प्यार -
जीवड़ा हरि

जोबणिय घरबारी बणग्यो तण निसणा तकरार
काम क्रोध लोभ लाडोज्यो आडम्बर अकार
जीवड़ा हरि

बूढाप माचलियो घाल्यो लामा सुरड़ पसार
रोग दोख रळ झीक्यो भ्रावयो भूठो लख ससार
जीवड़ा हरि

मरणै ओसर चेत लिन्हो आणद रूप ओवार
'हे समदर्शी पतित उधारण भव सागर सू त्यार -
जीवड़ा हरि

विजय वाण

विज विज विज, थारी परम विजय !
म्हैं हार्‌यो आज हारग्यो, जमारा हार गमाया
जद कदी म्हैं थान भूल्या विसर्‌यो छोडया, जद-जद ही
म्हारा आढया गाभा सू म्है उमीज्यो। म्हारे हिवडै - गिगण वठ्यो
थार आडो कोई पडदो नाखग्या। या करतूत म्हार सू सहोजी नही !
वीत्य जीवण री छिया म्हारो लारा कर अर मसारी मुरीनी ताना सू
वाहदेही मनै वलावै !
व रा सागो म्ह सू छूटग्यो, म्हारा हाय थारा हाथा मे है !
इस भिखारण जिनडी रै हाय मे जा री है-उवो सारो थारै दरजै री
भीख म मिल्योडो है मालय ! थारी विरुडवाण विज !

अेकर तो

सरव प्रकाशी महाराज ! कद सू विलार ? म्हारी विन-विणती
स्वीकारो नाथ !
अेकरगै अवस स्वीकारो प्रनारायण ! म्हार हिवड विराजो-पाछा
कदी न जावो !
जको समै था विन वीत्यो-वो काळी-पीळी आंधी मे उडग्यो ! हम्मैं
थारै
च्यानण मे जिनडी री वेल रा नाळ वधावणो चावू-जागतो रैवू,
सोवू-रोवू !
किसै उणमाद, किसडी शोध वेग म्हैं उठीन अठीनै रा रास्ता भुवाळी
खातो रयो ?
कुण जाणै कठीन डबकतो डोळा विणज करतो फिरयो ?
हम्मैं म्हार हिवडे थारा कान लगावो कान्ह !
म्हारै हिवडै गम लूजी नही थारो गावो ठै, सुणो !
म्हारै इण हिवडै मे पाप पूजी रयी नही तथा कूडी कुवध रा बूटा
थानै दीसै तो उपाड वगावो विष्णु हरि
म्हारी नौका पार लगावो !

शक्ति माग

हे सच्चिदाणदघण ! दुनिया रो काई कैणो-थे क्वो तो मानू !
विपत्तावा सू बचाव नी चावू, उवा स् डरू नही-वो मोथाव मागू ।
दुखो मन वेगो व्यावम भला मत दघो-उवै नै जीत सकू जको लखदाद
लणो चावू । थारी मदत नी मिल जद ताईं थापडा वण रिरावू नही,
जूवना रवू उवो जोस पा जावू ।
जगत रा भूडा अनय छळ-छेदर म्हारै परलै पडघा
तो म्हारो मन इण ताडणावा सू दुबळ नी हुयो ।
आ रुखाळी री अरजी नही है-दुख दरिया मे तिरणै री ताकत
माग है !
म्हैं बोझ हळको मद करावू ? म्हारो भार सिर ल्दयो वगतो रैवू
याही
विणती है ! म्हैं सुख र सम थानै सिर लोळ स्मरण करतो रैवू अर
दुख री
विरिया लोक हँसाई टनै तो हा जिक्षक नी जाणू-अै वरदान चाव !

नित नूवं नेह

हे त्रिलोकी नाथ । थारै नाव सू मिलण वाळो अै चीजा व नी है-
जवे
मनै चाहीज । नित नूव नाज नसरा सू म्हारै घट मे आवो वलमा ।
रग म रास मे सौरम शरीर म पुळक परस रस अमिट हरख री
इंमी अर अन्तर वड, म्हार मोद भर्‌या लोयणा मे साय दरावो ।
वेगा आवो सजधज सूरत ऊजळै अग मनहर मनराज, कवळ–
वदन आवा । हँसी खुशी रा सौरी मौरी वेगा आवो भडमल ।
सदीनी सरवरा सार आसा कामा मोटो माण
नित नूवा नखरा पधारो प्यारा स्याम ।

वडै घर रो गुमेज

अखिल ग्यानी ! म्है थारी मिहरवानी रो मँगतो हूँ, पण-इत्तो नी
जाणू तो ही
थारै घरणा र नड निवास राख'र मनै थारी दया सू ढक देवोला !
म्हैं काई वणावू-भूल जावू, फूल माळ वणावतो थको थानै भूल जावू
अर वणावट मे रीझ-रीज, भीजनै उवै री सुख सेवा मे गुचळ की
खाज्यावू ।
म्हार नणायोड माटी-गोवरियै घर मे मनै रमतो जोय'र नाराज
मत हा जाज्या, मनै माडो जाण विसराणो नी है । पण थारी तेज
वधकी
प्रेरणा सू मन जगाणो हवैला !
इया टटा र माय ही साचोट है, जिहाल सीपी रै मूढै मोती !
पण थारै विना
भेदण करण वाळो दूजो कुण ? जको प्रस्फुटित करै !
जाण जाण न मारण सू ही ईमी लाधै ।
म्हार दळदर रो अथाग सूनापो भरण आवै, गिरावट री पीडा ही
चेतणा उठा वठी करै । रगडा-झगडा र आपस विरोधी हाय तोवा मे
थारी ग'री वाणी मनै साफ सुणीज !

गीता री लोभी

हे कळाकार ! थू किसडाक मीठा गीत गाव ? म्ह वा सू रसीज्यो
वठो हूँ-सुण्या जावू !
थारै गाण री ज्याति जगत रै कणूका बीच व्याप रयी है-थारोड
सुरा री जाह्नवी
पाथर खडा रा भेदण कर ववै ।
म्हारी मनस्या है कै-म्ह उवा सुरा म स जोग कर
पण म्हार गळ रा सुर थार म्वरा नै रळ नी सवै ।
म्हारै च्यारूमेर स्वरा रो जाळ विछयोडो है
थाँ मन इय अनाख फद म चोखो फास रारयो है ।
गळावार ! वाँध्या राख-थार गीता रै मीठा गुदका सू
म्है घणो गोघड हो रयो हूँ ।

मौन स्वर

सता सुख देवाळ ! थारी अपार चुप्पी मनै रजै
थारी मौन मुस्काण म्हारै हिवडै वसावूला !
थारी अडीक म ढळती आ मौन रात, तारा रा दीया सजोवती
धुक्या लोयणा सू थारी बाट जोनै जादुराय !
म्हैं ही उवा वेवाक्य उडीक म्हारै हिडदै मे उँघा लेवूला ।
जद क्दे उवा वळ आवली अँधारो जावैलो
थारी वीणा रा सानेला तार उफणती स्वर धारा सू
आभ म उयळ पुथळ मचाता धरणी छा जावैला
उव वखत म्हारै जीव पखेरू रो आळा ही तो थारै
गीत स्वरा स गुजायमान हो जावलो ! तथा उव ही
सुरीली कळिया म्हार वागान री वन वेळा
कुसुम रूप खिल जावली !

आधमाण

अंतरजामी ! मनै थारै पिनग र पागै हठ ही पड्या रवणद्या
थारी चरण रज सू रिगदोळीजू ता रेत मे रळणद्यो ऋषीकेश !
यो ही म्हारो आघ है - आप सू अळगा मती करो अखिलेश्वर !
हे रव - म्हारा राम ! इण्ही ढव म्हारी चेतणा था मे वणी रै सक्ला
थारी आतरा रै वखत जको मेळो मडलो म्है व मू दूर ही खडो
रव्ूला, भला ही मगरिय मे ससू लार वाळी ठौड दिरावज्या ।
थारो प्रसाद लेवण लोगडा लंफ उलळला, मन प्रसाद नी लेणो है
म्है तो फगत थान देखतो खडो रव्ूला !
छेक्ड बच्या खुच्या प्रसाद रा भोरा हवै ता मन दिरावज्या
वडा हो, म्हार छोट दिल आ वसो विभु !

दरसण दुर्लभ

निरगुण हरि ! म्हारी लालसा इण जिनडी मे थानै नी देख सकी
आ सासती वाछा सूळ री तरा चुभती रसी कै थानै नी देख्या !
भूलीज नही या वधती पीडा सोता-जागता, रात-दिन वावळो
वणाया राखैली विधाता !
दुनिया र हाट-हटवाडा—म्है घणा दिन खोया
म्हार हाथा घणी माल-मत्ता आई, पण मनै उव सू काई मिल्यो ?
या प्यास दिल धुखती रयी कै थानै नी देख्या पण नी देख्या ।
लाम पथ थाक्यो, विसूणी लेणै वठ्यो-तत्काळ चेतै आयो
यो आराम निरफळ अर हराम, दरसण विना नैण तरसणै लाग्या !
निराकार सरकार ! म्है भूलोक्ड घणो-भुळावो मती म्हादेव !
उठतो-बठतो, खातो-पीतो कास करू अर कुढ कुढ मरू
म्हारो घरकोलियो मडै-खिल, वणावू-सवारू ।
गीत गाळ, सुर ताळ गूज, पण थारा दरसणा री चेतणा
हरदम खटकै चुभ पीड भागाय ।
थार म्हार भूली नी पड आ वेदणा मन सोता-उठता
हर पल फोडा घालै !

जागतीजोत

हे जगत देवता ! म्हारै खटाव कठै ? खटाव हुवै तो वा-री वा-
सागण ही अज रोजीना क्यूं करू-दाहराव ?
इण जिनडी मे म्हारी ता थारै दरसणा री साध है
थार आणद रा महा सगीत म्हारी जिनडी री वीणा म वाजता रवै
थार आभ री अणत च्यानणी जात, म्हार वारणै री क्याडी सू
कढ, कठैं कदी पूठी लौट नी जाव ?
रोजीना रा नूवा सिणगारा रै साज सग रता म्हार हिवड री
रगस्थली मे, खुल भावा नाच घालती रवै ।
म्हारै काय काळज री कुण्हो वासना, था - म्हा बीचाळै पडद रूप
नही आवै ।
थारो आणद च्यानणो म्हारै भीतरल अधारै नै अळगा भजा देसी !
थारो आणद म्हारी बापडी गरीबी री जडा मूळ नाश करतो थको
म्हार जीवण र आसा अनुष्ठाना मे प्रगटत विकास वधलो !

मातरूप माईत

मा ! थार स्नव सरगळ चरणा रो वासो ऊगतै सूरज री लाल
किरणा मे !

थारी मौत विजयी वाणी, शून्य गिगण व्यापै !
आख ब्रिह्माड मे फैली थारी चास वास रिजनास री म्है वन्दणा करूँ !
जीवण रा सगळा वारजा म मिली मैंमा री स्तुति गावू !
थार पूजण र चढाव मे म्हारो तन-मन धन, सो क्यू अरपू
माता ! थारा दया गळगच चरण सूरज री लाल किरणा मे वसै !
मा ! ग्यान री धम धार-थारी जाग री नूवी अगडाई
दयाला मात रूप माईत, थारा चरण घणा ऊँचा
राता रै तारा चसता दीया मे गिगण गगा रै प्रवाह
म्हारो चढावो क्या पूग ?
ग्यान धम धार थारी जाग-नूवी अगडाई
हारी दरसण लालसा लँफै-फँफै !

समदर उभळग्यो

हे अपार रूप उद्धारक ! समदर पार लगाणै रो वार-वोपार करणियो
भळे कोई दूजो ओर हावता तो थान ही थारो काम सूघा करणो पडतो!
आज आणद सागर मुरजाद मे नी रयो, ज्वार आग्यो है।
हे तारणतरणहार ! संग लोग थारी पतवार झालया पकडया झिल !
जित्तो मावै सावै आवै भार बोय्र प्राघ लादल्यो
म्हारी डुगछली नौका पार उतारो !
म्हे जळ धार मे तिरता वगस्याँ—
प्राण जाव तो जावणदया !
आज आणद समदर मुरजाद छोड दी ही है
कुण हे जको लार सू हलो मार ?
किसडो दागी, आगी जावणै सू रोक ?
ओ डर म्हे पल्या सू जाणा।
किण री दुरासीस, किण री कक राश, म्हानै सुखा री टोपी शिर
बिठाया है ?
लगर री डोरी म्हे खीचली अर गावता जा रिया हा
'म्हारी नैया लगादघा पार ओ सावरा अवतारी !

मोटी मलार

सरव व्यापी सनातन ! खुलक-मुलक मे रळ मिलणै वेगी
आज गळ मोटी मलार री गीत आणददायी राग मे कढै-चढै !
ओ गीत म्हार हिडदै तळ सू कित सुहण ढव-छव अगोरीज्यो है ?
पवन पाणी, आभ-उजास, सँग चीजा किण भात म्हाली जाण
वपरावू !
भात भतीली सजाई दिल सभा किण मतवल भरू ?
चखु खोनता ही म्हारा प्राणा म किण तरा रो आणद झरणो
ओसर झर ?
जक गल म्हैं वगतो जावू-व र राहगीरा नै कँया राजी करू ?
ह अदश्य अगम्य ! था आप सग ठौड वसो, आ वात म्हारै जीवण
म कितरी सुहणी व जीवत समता वपरावै ?
थारो नावा, थारा आखा कामा मे आपो-आप क्या गूजै-ओपै ?

मनभायो भोगवाळो

ह तारणहार-मायावी सूत्रधार ! थारा काई विचार ?
हण मनस्या नी हुव ता 'ना' करन्यो !
ठाली भटकाया अटकाया किसडो गरज पलै ?
थारो लारो छोड नहीं त्यारा चायै नवारा, भोगतो रम्यू !
थारी अडीक जाग म आंग्या सूजगी-ये नहीं मिलो तो ही
गैलो देखतो हूँ !
थारी वाट जावणी मन डाढी मीठी लाग ।
घराग घूर वठो हूँ-म्हारो मगतो मागणियार मन
थारी दया री भीख माग !
आपरी किरपा करडी होगी म्हारी ठाली ठणक इच्छा दरोगो,
आ अतृप्त इच्छा ही मन आछी लाग ।
इण भव र राज माग कितरा ही सुख-दुख भोज्या जातरी
म्हारै साम हुता कठ आव-जाव !
म्हारो कोई केलो नहीं पण भळ ही म्हारी मनस्या वणी रवै
मिलण कामणा ही मन प्यारी लाग !
च्यारू पासा इमी जळ, जळ जळाकार सावळ धरा
यो ही रोजणो रोवै !
थासू भेंट नी हवै-कोरी पीडा ही करमड पाती आई है
आ भागवाळी आछी म्हारै मनभायो है !

अडेसण ओल्हो

म्हारा राम रघुनाथ ! थान खोज लेवू वो गैलो वतावो !
था-म्हा बीच, थारी किरपा कयाडी जडी है ऊंची भीता खटी है ।
चतुर्भुज ! थारा च्यारा हाथा रो दियो धन जन, सुख-दुखी मन अर
व री मोकळी आडी खाइया खोदघोडी है ।
खिडता मडता वगता भूरा-काळा वादला लारै कदे-यदे सूरज री
किरणा दीख ज्यावै, उण्ही भात ओटै ओहलै सू कदे कदास
थारो हरख हिंमास मिल ज्यावै ।
उव दूजा ही ह्वै जक नै थे थारो अथोग प्रेम बोझ देवणै त्यारगा
प्यारा मानो ।
उत्रा रा सारा गहणा गाभा, ये पल्या ही पार-वार करदयो !
वा र घरा थे कुण सो अन-धन भरा ? उवा वापडा न सफा निरधण
अर निराभिमान करदयो !
दुनियाँ री माण मोथाब, अपमाण-भो, लाज-शम इत्याद सू वै
कोरपाण हुज्य ।
विश्व र लूठ धन वभव ही डील चूट तोड खाइज ।
इण्ही तौर तरीक सू उवा नै थारो पडतग ह्व, वै आपरै जीवण री
मोटी सफलता थारै म ही जोवता रैवै !

चोराचोरी

ओजो म्हारा जीवण साथी ! आज बरसणी ठडी झडी मे
क्विण सू मिलण वारै सिधावो ?
आभो निराशा मे आसू टेर-म्हारी आम्या री नीद विडर रयी है।
हे म्हारा सिरधणी ! वारणो खोलो म्हैं थारी वाहवा' झडोवारणा
ल्यू ।
वारै तो की नी दरसै, थारो गैलो किस्यो, आ सोचू ।
आतरै सरिता कराडे किण्ही गिंघराही रै तम्बू म
तथा किण्ही घोर अधारै मे ?
हे म्हारा जीवण सगी ! थे मठ ही परसगी तो नी वणरिया हा ?

घटा घुमड सांझ

सावणी सिंन्या अँधारी लागी दिन दीयो सो बुझग्यो ।
चौमास री छाटा ठम वरसै ठहर–ठहर चुवै ।
टील री टापरी कूण मे वठो थ किसड सोच सरोवर मे डूब्यो हैं ?
वगा रा बूदा ठम पड आज हरख गाज ऊन ऊमड ।
छाना छिडक सू सरगळ वाय वेळा फूला मे काई सनेसो पौंचा
रयी है ?
पण मन जक कगाड री पूछताछ है उवो कठ ही नी लाधै ।
पाणी भीज्या पुस्वा री सुशवू जीवडो वेज्यान कर राख्यो है ।
अधारा रात रा सारा रीता प्होर आज किण स्वरा मे भर सकूला ?
कुणमी सारँगी गुमा देण सू म्हैं आज सोक्यू भूल विसरचो
आवळ-व्याकळ हूँ वरसा री झारी रै रै फुवारा चुवै
ठण्ण्या पाणी पीवू गुदळ्यो मोरत जोवू ।

आळ जुजाळ

राता रळियो-सपनो पूरो होग्यो लोयण उघडग्या !
घुळरी गाठा खुलगी अमूझ्या गाघा घाटा सुख पाय सुळझग्या ।
हम्मैं हिवद पडदो नी रयो—म्है चार आ ढूकयो हू ।
अतर-कमळ रो कळया खिल रयो है ।
म्हारै चोबार द्वारै उढाळघो वारणो उघाड
खुद सिगरत मभान श्रीगोपाल आ पूग्या है
म्हार नैणा नीर खदबदै, हिवदो गळणदयो अर
उवा चरणा मे रळणदयो ।
आभै रो प्रभातियो उजास म्हार ग्राथी आव
जेळ रो जडयो वारणो उघाडो है, वै मे ज जवार झिणकार—
श्रीकृष्णचन्द्र नदलाल गाइज !

डरतो डील

चिदाणदघण ! आज च्यानणी रात म्हारा प्राण भळे चचळ ह्व
जाणू थारै नजीक बठणै री ठौड मिलली काई
सोचू-सुहणी नाक नक्श चेहरो देख भाळूलो अर काई म्हारा
उछाछळा लोयण थार नणा नै ताक बाध देख सकला
म्हारा गीत भरया आसू काई थार चरणा र लाम स्पश रो आदे
उगा लेसी ? इण डर सू क कठ ही यू खुद दियो दान पाछो लोस
लेव
म्है धरणी मे घुरी लाद लुक जावूलो
थिरचक थाणाधर ! था म्हार हाथ, थारा हाथ धरया है–म
डर है कठ ही
इम्मे मन नेडै वलाय खडो करचो तो म्हार प्राणा मे डरावणो दळ
छाईजजैलो । सोचू यठै ये थारो दियोडो दान पाछा नी उगा ल्योला

स्वतत्र हद

हे कवित्र उजास ! म्हार नैत्र सी गाढै म थारो ही म्हार गरणाव !
म्हार मायन पाग थारा ही भावणा उजास है ।
हे सुन्दर आगामी ! निनरा ही रंग, गोरम, गीत पद्मा इत्याद
थोर रूपा रा नेना विस्तार म्हार हिवड़ नम्या है ।
जणी ता म्हार अनर म थारो ओप सोन रनी इघरी अगराळ है !
थांरा-म्हारा मिलण जाण रगेगो जद आत्मा अम्बाम
गैल पग अळगा हुज्यैना !
चराचर मारग री तरगा रो इमरो हूंलो अून उठगा रै धरणी मान
जावैनी
थार ध्यानरी म छिया नी म्हार अतर धाम गोवै नै दीन गोठ गिनै !
थांर आतुम सू ही उवा गळगळो अर गमगग हय
म्हारा जीवड़ा जाण थारी छिन इत्ती कपड़ !

भजन बगलो

गोविंदाजीलाल ! हाजी काई आभैय उपराडजी–
बगलो थारोजी सावरा !
सावरियाजीलाल ! हाजी काई हेजा हठा आवो तो–
मिलभिट जाज्योजी सावरा !
हाजी कोई ऊँचाप दूरापेजी, आता-जाता हारयाजी-सावरा !
गिरधारीजी राज ! हा जी म्हारो आगणियो अडोळोजी-
वाखळ बिरगीजी सावरा !
गोपाळाजी राज ! हा जी काई पीजरियो पुराणो जी-
जीवडो सागी जी सावरा !
हाजी काई लातरियो पुराणोजी सुवटो सागीजी सावरा !
सावरियाजी श्याम ! हा जी काई आभैय ऊचावजी
रैणा थारोजी सावरा !
हाजी काई मेवडला झड माडयाजी अब घर आज्योजी सावरा !

सितार वादण

धागनवारीलाल ! म्हैं थानै हम्मैं जेवल्डा नी रैणदयूला !
म्हारा जुग-जुगीन सिरदार ! म्हे थार दरबार पोंच जावूला ।
काया रा आधार ! थारै दरबार री चतराई जोवूला ।
मा भो रा भरतार ! थारी सितार रा तार मजा सवार क्षण -
मणावूला ।
म्हारी जिनडी रा करतार ! म्हारी आत्मा था दरसणा हेत रात्यू
रा बोकर !
रामा गज कुंवार ! था-म्हार जीवण-मरण रो जका विस्तार
करयो है
उवा सगळो अळा थळो म्हारै गीता री गठडी मे बांध'र थार
चरणा धरणो चावू ! इस तरा सइवडी गीत वडी शब्द मिणिया सू
जुडो पासल, पल भर मे थार चरण-कमला पोंच जासी
अर म्हैं अयोग-मजोग म बठ सागणती सितार वजावूला !
थार साथ म्हारो इस्यो कौल-करार है !

सिझ्यावारो सुरता

झट झासड री रात अधारी इसडै वखत अकलो वारै
वठो जोवू वाट आपरी वलम विभु वनवारी, करु स्याम इन्तजारी
भाण आथव सिझ्या आव वाज घणा लोग विलमावै
रिग-थिग वगू म्है आथणवारी वणू हूँ म्हे कागेबारी
वैठ्यो आज भरोसै थार पाळै पूर न पूरा म्हारै
अेकल्डो म्हू दरस अडीक् आशा राखू रोवू झीवू
क्सिणा म्हारी सिसणा मेटो 'गई करो' ना वारी
लामी रात कट वेद सारी सुणो अज गिरधारी !
थावी आस अवासा जोवू घणो उदास कठै पड सोवू ?
मनडो वादळिया भरमायो भूव वाय विहारी -
अज सुणो गिरधारी
झड झागट वारण वठ्या आश लगाया थारी -
अज सुणो गिरधारी

पर्यंत आठो पान

धारीति प्रभाकर ! आप भगी सभा मे रही लुक सवोला !
म्हार हिडद म आ वहो सूना वठा मोजा माणो
थान काई सिख्या थानो रिग्ही न ठा नी लाग ।
म्हैं फिरनड, दश निदेशा घणो घूम फिर्या हूं
आस विस्व म थारी 'आम मोचणो' रो गल मेलीजै
सबतो विसार ! हम्में थारी इच्छयानुसार म्हारै हिडद रै
सूण आ बैठा, लुकया रणा हो हासी मन मती छाडो !
जाणू म्हारा होया वरहो है थार चरण पंवळा लायक नी !
पर प्रणव ऊंकार ! थारै चरण स्पर्श सू म्हारा हिडदा पिघळ'र पंवळो
हो नीं हासी, जाणू म्हारी साधणा वेल रो नाळ आजू आछो है सो
थाराह किरपा भरण रण मृ छिण भर मे म्हारी फुलवाडी खिल
जावसी अर म्हैं तत्काळ फळ सभाळ मे जुट जावूला !